Dr. [illegible] Rajan
H. D. Jain College (Ara)

B.A Part - III

Paper - VI

Topic - Indian National Congress

part - I

5. 1919 से 32 तक भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का एक संक्षिप्त इतिहास प्रस्तुत करें?

~~18~~ 1885 ई० में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना कोई आकस्मिक घटना नहीं थी बल्कि 1860 ई० में आरंभ हुए राजनीतिक चेतना का फल था। आधुनिक भारतीय, राजनीति से संबंधित लोगों व राष्ट्रीय जागरण से प्रभावित लोगों ने सोचा कि अपनी आवाज को छोटे-2 संघों से उठाने के बदले एक राष्ट्रीय मंच से उठाया जाए। इस प्रकार, भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना सन् 1885 ई० में होकर एक राष्ट्रीय पार्टी, एक झंडा व एक चिन्ह प्रदान किया।

उन्नीसवीं शताब्दी की अंतिम अथवा बीसवीं शताब्दी के आरंभिक वर्षों में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस में एक नए और नवीन वर्ग का उदय हुआ जो पुराने नेताओं के आदर्श तथा ढंगों का कड़ा आलोचक था। ये कुछ नए लोग चाहते थे कि कांग्रेस का ध्येय स्वराज्य होना चाहिए जिसे वे आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता से प्राप्त करें। इस दल को पुराने उदारवादी की तुलना में उग्रवादी कहते हैं।

जालियांवाला बाग कांड ने पूरे भारत को अपनी ही धरती में रोने और चिल्लाने के लिए छोड़ दिया, सारा देश आतंक के आंचल में समा गया, यह आतंक धीरे-2 ~~क~~ सारे देश को छू ने लगी। (कांग्रेस) मोतीलाल नेहरू एवं प० मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में एक कमेटी नियुक्त किया। 1920 ई० में हंटर कमेटी का रिपोर्ट आया।

~~@~~ जालियांवाला बाग कांड के बाद कांग्रेस का वार्षिक अधिवेशन 1919 ई० में अमृतसर में हुआ। अधिवेशन के अध्यक्ष मोतीलाल नेहरू ने ब्रिटिश ~~स~~ शासन की कटु आलोचना की। मगर ~~@~~ महात्मा गाँधी ने कांग्रेस से बाहर निकल जाने की धमकी देकर अमृतसर कांग्रेस में एक ऐसा प्रस्ताव पास करवाया, जिसमें लोगों की तरफ से हिंसा का जो प्रदर्शन हुआ था, उसकी निन्दा की गयी थी, लेकिन साथ ही इस बात को भी स्वीकार किया गया था कि बहुत अधिक उत्तेजित किये जाने पर ही लोग क्रोध से बावले थे।

सितम्बर 1920 ई० में लाला लाजपत राय की अध्यक्षता में कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में महात्मा गाँधी द्वारा असहयोग आन्दोलन संबंधी प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया। पं मदन मोहन मालवीय, चितरंजन दास, विपिन चन्द्र पाल, मि. जिन्ना आदि ने इस प्रस्ताव का विरोध किया। लेकिन पं. मोतीलाल नेहरू तथा अली बंधुओं (मुहम्मद अली व शौकत अली) ने प्रस्ताव का जोरदार समर्थन किया।* असहयोग आन्दोलन का उद्देश्य यह था कि ब्रिटिश शासन को जो भी राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक संस्थाएँ हैं, उन सब का बहिष्कार कर दिया जाए और इस प्रकार सरकार की मशीनरी को बिल्कुल ठप्प कर दिया जाए।

*... नागपुर में हुआ। अधिवेशन के वार्षिक गाँधी जी के प्रस्ताव के लिए

असहयोग आन्दोलन की आकस्मिक समाप्ति व गाँधी जी को मिली सजा ने राष्ट्रवादियों को किसी नए कार्यक्रम को चलाने के लिए उत्प्रेरित किया। इस समय सी० आर० दास कांग्रेस अध्यक्ष तथा मोती लाल नेहरू महामंत्री थे। इन नेताओं ने गया कांग्रेस अधिवेशन में इस नए कार्यक्रम से संबंध प्रस्ताव रखा और तर्क दिया था कि इससे या तो विधान परिषदों का स्वरूप बदलेगा या वे खत्म हो जाएँगी। लेकिन कांग्रेस के दूसरे खेमे ने जिसका नेतृत्व वल्लभ भाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद कर रहे थे, इसका विरोध किया। प्रस्ताव नामंजूर हो गया। सी० आर० दास मोतीलाल नेहरू ने कांग्रेस के अपने पद से इस्तीफा दे दिया। 1923 ई० में एक नई पार्टी "कांग्रेस खिलाफत स्वराज्य पार्टी" के गठन की घोषणा की।

स्वराज्य पार्टी ने कांग्रेस के ही कार्यक्रमों को अपना कार्यक्रम बनाया, फर्क केवल इतना था कि इस पार्टी ने साल के अंत में होने वाले चुनावों में हिस्सा लेने का निर्णय भी किया। इसने घोषणा की कि वह विधान परिषद में स्वदेशी सरकार के गठन की मांग उठाएगी और यदि मांग नहीं मानी गयी, तो पार्टी के सारे निर्वाचित सदस्य विधान परिषद के भीतर एकजुट होकर परिषद की कार्यवाही में बाधा डालेंगे और उसके काम-काज को असंभव बना देंगे।

लेकिन सी० आर० दास, मोतीलाल नेहरू और गाँधी जी ने एक संयुक्त बयान पर हस्ताक्षर किए, जिसमें कहा गया था कि स्वराजी नेता कांग्रेस के अभिन्न अंग के रूप में, कांग्रेस के नेतृत्व विधान मंडल में अपना काम करते रहेंगे। दिसम्बर में बेलगांव कांग्रेस अधिवेशन में इस निर्णय को मंजूरी दी गई।

इधर असहयोग आन्दोलन की असफलता ने क्रांतिकारी आन्दोलन को पुनः तेज कर दिया। असहयोग आन्दोलन के एकाएक वापस ले लिए जाने से इन उत्साही युवकों की उम्मीदों पर पानी फिर गया। इनमें से अधिकांश ने अब मान लिया था कि सिर्फ हिंसात्मक